ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(8): 156-159
www.allresearchjournal.com
Received: 11-04-2022
Accepted: 17-06-2022

लक्ष्मी प्रसाद शर्मा
शोध-छात्र, सिक्किम प्रोफेशनल युनिवर्सिटी, सिक्किम, भारत

Corresponding Author:
लक्ष्मी प्रसाद शर्मा
शोध-छात्र, सिक्किम प्रोफेशनल युनिवर्सिटी, सिक्किम, भारत

'कवि भानुभक्तको जीवन चरित्र' एक समीक्षात्मक अध्ययन

लक्ष्मी प्रसाद शर्मा

सार:
हिन्दी रामकाव्य परम्परा में गोस्वामी तुलसीदास और उनके द्वारा विरचित रामचरितमानस का जितनी बड़ी महिमा गायी गई है नेपाली साहित्येतिहास में कवि भनुभक्त आचार्य का और उनके द्वारा रचित भाषा रामायण की उतनी ही बड़ी मान्यता रही है। कवि भानुभक्त आचार्य को इसी ग्रन्थ रचना के कारण पं.मोतीराम भट्ट ने आदिकवि की उपाधि से विभूषित किया था। यद्यपि इस उपाधि पर नेपाली साहित्य के मुर्धन्य साहित्यकारों की आपत्ति भी रही है, परन्तु इस उपाधि को लोगों ने कण्ठमाला की भाँती गले में धारण किया हुआ है जिसे उतारना 'जलबिन मछली' वाली बात यहाँ आसकती है। कुछ भी हो ऐसे महान रामायणकार भानुभक्त आचार्य की जीवनी लिखकर पं.मोतीराम भट्ट ने नेपाली साहित्य में एक नया अध्याय का शुभारम्भ किया और सर्वप्रथम जीवनी लेखन विधा की परम्परा का सूत्रपात भी किया। इस प्रथम विधा के श्रीगणेश के कारण नेपाली साहित्य में जीवनी लेखन परम्परा विकसित हुई है जिसका श्रेय पं.मोतीराम भट्ट को जाता है।

'कवि भानुभक्तको जीवन चरित्र'
मोतीराम भट्ट द्वारा लिखित इस पुस्तक के प्रथम प्रकाशकीय के प्रारम्भ में ही लिखा गया है 'आदिकवि भानुभक्त आचार्यको जीवनचरित्र सर्वप्रथम १९४८ मा मोतीराम भट्टले लेखी छपाएका थिए। भारतजीवनका सम्पादक बाबू रामकृष्ण यसका प्रकाशक थिए।[1]
इस पुस्तक में यह लिखा गय है कि अगर मोतीराम भट्ट ने उस समय कवि भनुभक्त की जीवनी न लिखी होती तो भानुभक्त को तो कितने साल बाद पहचान पाते धन्य है मोतीराम भट्ट जिन्होंने नकेवल भानुभक्त की व्यक्तित्व को सार्वजनिक किया अपितु उन्होंने प्रथम लेकभाषा में नेपाली रामायण लिखनेवाले नेपाली साहित्य में रामकाव्य परम्परा के आदि कवि का गौरव प्रदानकर इस शंका पर पूर्णविराम भी लगायी है। इस पुस्तक का सम्पादन पं मोतीराम भट्ट ने किया और इसका प्रकाशन सर्वप्रथम कासी बनारस में अवस्थित भारतजीवन के संस्थापक बाबू रामकृष्ण वर्मा ने किया। इसके पश्चात इसी जीवनचरित्र का दूसरा संस्करण नेपाली साहित्य सम्मेलन दार्जीलिङ से सं.१९८४ अर्तात् इस्वी संवत् १९२७ में श्री सूर्यविक्रम ज्ञावाली जी के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ था। मोतीराम भट्ट ने इसपुस्तक की रचना करते हुए इस बात की मर्यादा भी रखी है कि अब लोगों के सामने इतनी बड़ी जीवनी पढ़ने सा समय नहीं रहा अतः इसका लघु आकार हो और सहजता के साथ इसे एक साथ में समग्रता से पढ़ा जाय। कोइ यह कल्पना नहीं कर सकता कि भानुभक्त आचार्य की जीवनी इतने कम समय में सरल और मिठास भरी मिजाज के साथ पढ़ा जा सकता है। जिस में केलव२४ पेज में भानुभक्त की जीवनी को गागर में सागर की भाँती समेटने का कार्य किया गया है। पं मोतीराम भट्ट ने अपने लेख का शुभारम्भ श्री गणेसाय नमः से किया है अतः लेखक आस्थावान है और श्रद्धावान भी। प्रारम्भ में गेर्खा राज्य की राजधानी काष्टमण्डप से पश्चिम की ओर तनहूं नामक देश और उस देश के राजा उत्तराखण्ड के राजबाडाओं में प्रमुख माने जाते थे। इन्हीं के बाहु पराक्रम के चलते मुगल भारत से नेपाल घुसने की कल्पना तक नहीं करते थे। यहाँ के पहाड-पर्वत, जंगल, नदी आदि के प्राकृतिक चित्रण के कारण जीवनीकार ही नहीं अपितु जीवनीकार के कुप में छुपा एक कवि है ऐसा आभास होता है।कवि ने भानुभक्त आचार्य के गाँव की प्राकृतिक मनोरम का विस्तृत चित्रण किया है।
कवि ने अनी क्व्यकौशलता का परिचय दोते हुए ऐतिहासिक बोध भी किया है कि तनहूँ पहले उत्तराखण्ड का अंश था जिसको गोर्खा राजा ने एकीकरण के समय अपना धरोहर बनवाया था। यहाँ गोर्खा राजाओं के वीर चरित्र के चित्रण करते हुए उनकी कीर्ति दुनियाभर में होने की बात कही और इसको एक कहावत के माध्यम से समझाया गया है -' निसाफ् न पाये गोर्का जानू' इसी के आधार पर मोतीराम भट्ट ने गोर्खा राजा के सम्मान में अपने राष्ट्रभक्ति का उद्गार यहाँ किया है- अचल् झण्डा फर्कोस् फरफर गरी कान्तिपुरमा

रिपुको मन थर्कोस् तरथर गरी छीन घरिमा
यवन्ले राज गर्दा कति पतित हिन्दुस्थल भयो

फकत् यो नेपाल्को मुलुक बचि कञ्चन् रहिगयो।[2]

कान्तिपुर नेपाल की राजधानी के एक विख्यात स्थल है अतः नेपाल का झण्डा नेपाल का गौरव है और हमारा झण्डा ऐसे फरये जिसे देखकर शत्रुओं का दिल भी घबराये। मध्यकाल के आक्रान्ता मुगलों ने हिन्दुस्थान में हिन्दुओं के स्थल को तहस-नहस कर ताण्डव किया था उस समय भी उन्होंने नेपाल की ओर देखने का दुःशहास तक नहीं किया था। एक ही नेपाल विशुद्ध आक्रमणहीन रहा यह है मेने राष्ट्र नेपाल का गौरवमय इतिहास। भानुभक्त ने अपने जन्म को लेकर अपनी रचना प्रश्नोत्तर के अन्त में स्पष्ट लिखा है जिसका उल्लेख भी प्रामाणिकता में संदेह न हो उक्त जीवनी में जीवनीकार ने दिया है।

भानुभक्त भनी प्रसिद्ध नरमा जस्को त नाऊँ पनि
घर् तिनको तनहूँ त बेसि चुंदि हो गाऊँ छ रम्घा भनी।
प्रख्यात् छन् सब लोकमा ति गुणि हुन् विद्वान् कवी खुब् थिया
यो प्रश्नोत्तर बुझ्नलाइ सजिलो भाषा बनाई दिया।।

इस जीवनी के पृष्ठ चार के अन्त में इसको और पुख्ता करने हेतु मोतीराम ने एक अलग से टिप्पणी भी दी है वे लिखते हैं- यो श्लोक भानुभक्तले बनायेको ह्वैन भनी कसैले पनि शंका नगर्नुायसमा उत्तम पुरुष की उक्ति नपारी प्रथम पुरुषपुरुषलाई देखाई बनाउनाको मतलब कवि भानुभक्तको क्या हो भने यसरी लेखेदेखिन् पद्यमा भनाइको छाँट अनौठा देखियेला भन्ने हो.....
इसी तनहूं में महान पंडित श्रीकृष्ण आचार्यजी के छः पुत्रों में से ज्येष्ठ पुत्र धनञ्जय आचार्य के गर्व से विक्रम संवत् १८६९ को बालक भानुभक्त आचार्य का जन्म हुआ। आज भी भारत एवं नेपाल में १३ जुलाई को भानुजयन्ति के रुप में भव्यता के साथ मनाया जाता है। यहाँ जीनवीकार ने स्पष्ट उल्लेख किया है कि "हाम्रा गोर्खा बाषाको उन्नतिको उदय पनि यसै वर्ष भयो भनी जान्नू।गोर्खा भाषामा हुन त धेरै नामका कवि भानुभक्तभन्दा पैह्ले भये तर कविताको मर्म जानी भाषा पद्य लेख्ने कविहरुमा आदिकवि भानुभक्त नै हुन्।"[3]
इसी आदिकवि शब्द को लेकर विद्वानों में काफी समय तक आलोचना-प्रत्यालोचना का दौर चलता रहा आज तक इसका पूर्णविराम लग नहीं पाया है।
धनञ्जय आचार्य के एक ही पुत्र होने के कारण भी भानुभक्त का पालन पोषण सभी के निगरानी में हुआ और समय में ही उन्हें अपने दादा का शिक्षण आश्रय प्राप्त हुआ।लगभग १८ वर्ष की अल्पायु में भानुभक्त अपेक्षित शास्त्रों से परिचित हो गये। १८९१ के उस दिन का जिकर करते हुए भट्ट जी लिखते हैं भानुभक्त के जीवन में वह दिन टर्निंडपैण्ट था। उनको भौतिक शिक्षा तो प्राप्त था, परन्तु जीवन की गहराई से वे वाकिफ नहीं थे जिसकी शिक्षा मनुष्य को परिस्तिति दिलाती है न कि परिवार। एक दिन भानुभक्त नदी के किनारे एक शिला पर बैठे शितलता का आनंद ग्रहण कर रहे थे तभी वहाँ उन्होंने एक घाँसी को घास काटते देखा और उन्होंने उसका परिचय प्राप्त करना चाहा तो उस अनपढ़ घासी ने अति बौधिकता से अपना परिचय और मानवजीवन पाकर कैसे परोपकारी होकर जीना चाहिए और उसके जीवन का प्रयोजन सहित भानुभक्त को बताया। जैसे दत्तात्रय के २४ गुरुओं की चर्चा भागवत में है वैसे ही उदार भानुभक्त को एक और गुरु मिल गया। उसकी कही हुई एक-एक वाणी शिरोधार्य थी। उसे पुछने पर कि तुम्हारे पास कितना धन जमा है उसने कहा था घास और लकड़ी बेच कर जो पैसा इकट्ठा होता है इसीसे परिवार का भरणपोषण होता है उसी में एक-दो पैसे जमाकर गाँव में एक कुँए का निर्णाण कर रहा हूँ ता कि लोग सहजता से इसका उपयोग कर सके।
जब घासी वहाँ से जाने के बाद कवि का भावुक हृदय उसी पुनः गा उठता है-

भर्जन्म घाँसतिर मन्दिइ धन् कमायो। नाम् क्यै रहोस् पछि भनेर कुवा खनायो।।
घाँसी दरिद्रि घरको तर बुद्धि कस्तो। मो भानुभक्ति धनि भैकन आज यस्तो।१
मेरा इँदार नत सत्तल पाटि क्यै छन्। जे धन् र चीजहरु छन् घरभित्र नै छन्।
तेस् घाँसिले कसरि आज दिएयेछ अर्ती। धिक्कार हो!मकन बस्नु नराखि कीर्ति।२[4]

कहते हैं भानुभक्त के हृदय में कविता के प्रति प्रेम इसी घटना के बाद जागने लगी जैसे महर्षि वाल्मीकि को उस क्रौञ्च पक्षी के निधन की घटना के प्रत्यक्षता के बाद काव्य रस फूटना प्रारम्भ हुआ था। भानुभक्त हर समय उपरोक्त पंक्ति को दोहराते लोग उन्हें अजीभ ढंग से देखते भानुभक्त नजरअंदाज करते थे। हमेसा भानुभक्त आचार्य के मन में यह बात रहती थी कि मुझे ख्याति कब मिलेगी इसके उपाय वह हरदम लगनशील रहते। सरस्वती की कृपा उन्हें थी तो उन्होंने रघुवंशतिलक श्रीराम पर कुछ श्लोकों का निर्माण किया फिर अध्यात्म रामायण के आधार पर उन्होंने सर्वप्रथम अपनी भाषा में रामायण का बालकाण्ड सम्वत् १८९८ विक्रम में समाप्त किया। इसके पश्चात् वे छिटपुट कविता ही लिखते रहे। सम्वत् १९०१ में एक रोमांचक अनुभव का सामना करने का अवसर उन्हें प्राप्त हुआ। अपने गाँव से दूर कलाधर नामधारी के यहाँ मन्त्र सुनाने हेतु २-३ दिन के लिए घर से निकले। जहाँ गजाधर सोती से भी उनकी मुलाकात हुई तो उसने भानुभक्त को अपने घर में आने का न्योता दिया भानुभक्त ने उसे समय मिलने पर जरुर आने का आस्वासन देकर टाल दिया। एक दिन भानुभक्त को लगा कि न्योता भी है गजाधरसोती के यहाँ हो कर आउँगा यह सोचकर निकल पड़े। वहाँ पहुँचते-पहुँचते रात हो गयी। उन्हें सूचना मिली कि गजाधर सोती भी अपने पुत्र को लेकर कही दूर चलागया है। तो रात होने की बजह से उस रात वहीं गुजारने का निश्चय किया। उस घर की बहु बहुत शालीन थी जिसने घर के बाहर मुझे सोने के लिए स्थान दिया, किन्तु उसकी शास ने कवि भानुभक्त को वहाँ से भी बाहर का रास्ता दिखा दिया। फिर उस रात कवि ने एक पेड़ के निचे गुजारा किया। सुबह जब गजाधर का बेटा वहाँ से निकला तो भानुभक्त नें उस रात की घटना तथा उसकी माँ के व्यवहार को लेकर एक पंक्ति रचकर उसे अपने पिता के आने पर उन्के हाथों में देने का निवेदन किया। उसमें लिखा थाः-

गजाधर्सोतीका घर बुढि अलच्छिन्कि रहिछन्।
नरक् जानालाई सबसित बिदाबादि भइछन्।।
पुग्यौ साँझमा तिन्का घर पिढिमहाँ बास गरियो।
निकालिन् साँझैमा अलिक पर गुलजार गरियो।।[5]

उस बच्चे ने इस पंक्ति को जोड़-जोड़ से पढ़ना प्रारम्भ किया और अपने पिता के आने से पूर्व ही कण्ठस्थ कर लिया था। पिता ने जब इसे सुना तो बह लज्जि हुआ और उन्हें इस बात का खेद हमेशा बना रहा। ऐसी घटनाएँ महान कवियों के जीवन में एक प्रेरणा का काम करती है।जीवनीकार ने इस घटना को लेकर लिखा है "यस श्लोकले गर्दा भानुभक्तले गजाधर् बाराह्मणको बेइजती गरे भनी कसैले दोष् नलाउन्, भानुभक्तले ब्राह्मणको अखानो गरेको ह्वैन, अतिथिको सत्कार नगर्नेलाई यस्तै दण्ड मिल्दछ भनी दृष्टान्त देखाएको हो।" अर्थात् अतिथिदेवो भवः की मर्यादित वचन के अपमान को समाज कतई स्वीकार नहीं कर सकता। नेपाली समाज में इस वचन को आप्त वचन के रुप में स्वीकार किया जाता रहा रहा है। भानुभक्त आचार्य ने इस घटना को एक प्रेरणा के रुप में स्वीकार किया और इस सीख को उन्होंने बधुशिक्षा की रचना करडाली। इससे यह भी भाषित होता है कि नैसर्गिक प्रतिभा सम्पन्न कवि किसी भी परिस्थिति से मुह नहीं मोड़ता अपितु उस स्थिति में ही अवसर ढूंढ निकाल लेता है।जैसे भानुभक्त ने इस ग्रन्थ के माध्यम से मानवचरित्र और सामाजिक यथार्थता को भी उजागर करने का कार्य किया है जो जन अपेक्षित भी है और लेखकीय गुण भी। भानुभक्त द्वारा रची विक्रमी १८९८ से १९०५ तक की कोई भी रचनाएँ प्राप्त नही होती। परिस्थितिवश उन्हें नेपाल आना पड़ा और उस दौरान जब वे काठमाण्डु से कुछ किलो मिटर दूर बालाजी में आकर थोड़ी देर आराम करते समय उनका कवि हृदय शान्त नहीं रह सका तो उन्होंने उस रमणीय स्थान को लेकर एक श्रृंगार रसपूर्ण दो पंक्ति लिख डाली।

जहाँ बसेर कविता यदि गर्न पाऊँ। यस्देखि सोख अरु थोक म के चिताऊँ।
यस्माथि झन् असल सुन्दरि एक् नचाऊँ।खैंचेर इन्द्रकन स्वर्ग जहीं बनाऊँ।।

यति दिन पछि मैले आज बालाजि देख्याँ। पृथिवितल भरीमा स्वर्ग जो जानि लेख्याँ
वरिपरि लहराका झूलि बस्न्या चरा छन्। मधुर वचन बोली मन् लिँदा क्या सुरा छन्।। [6]

भानुभक्त आचार्य अर्थ चमत्कार और शब्दालंकार में माहिर हैं। एक तरफ बालाजी जैसा रमणीय स्थान और दूसरी ओर कवि कल्पना की अपार छटा यहाँ देखने को बनती है। भानुभक्त की ऐसी श्रृंगारिक पंक्तियाँ बहुत ही कम मात्रा में प्राप्त होती है। वैसे वे करुण रससम्राट हैं, किन्तु नैसर्गिक कवि को किसी भी एक छन्द के बंधन में बाँधना यशोदा मैया द्वारा श्रीकृष्ण जी को बाँधने के प्रयास का समान ही है। शायद यह हमारी संकुचित अवधारणा का ही परिणाम हो सकता है।

एक घड़ी बात वे फिर कान्तिपुर अर्थात् काष्टमण्डप(काठ्माण्डु) पहुँते हैं तो वहाँ की वास्तुकला देखते ही बनता है। वे काठमाण्डु के पौराणिक घर छत दिवार, सत्तल, बाजार, इनार, सड़क, गल्ली, देशविदेश की वस्तुएँ, अनेक भाषा अनेक बोली, सुन्दरीयों की टोली, आलंकारिक सजावट बड़ा रमणीय उन्हें लगा वे पहली बार जीवित अवस्था में स्वर्ग का भ्रमण कर रहे हों। पल-पल की बदलती तस्वींरें उन्हें सम्मोहित करती थी। शायद कवि भानुभक्त पहलीबार काठ्माण्डु भ्रमणार्थ निकले थे। उन्होंने इस रंगीन शहर का चित्रण पाँच पंक्ति में किया है-

चपला अबलाहरु एक् सुरमा।गुन केसरिको फुल ली शिरमा।
हिँड्न्या सखि लीकन ओरिपरी।अमरावति कान्तिपुरी नगरी।।१
यति छन् बनि गन्नु कहाँ धनिञा। खुशि छन् मनमा बहुतै दुनिञा।
जनकी यसरी सुखकी सगरी। अलकापुरि कान्तिपुरी नगरी।।२
कहिँ भोट र लन्दन चीनसरी। कहिं काल्भरि गल्लि छ दिल्लिसरी।
लखनौ पटना मदारस (मदरास)सरी। अलकापुरि कान्तिपुरी नगरी।।३
तरवार कटार खुंडा खुकुरी। पिसतोल र बन्दुक सम्म भिरी।
अति शूर र वीर भरी नगरी। छ त कुन्सरि कान्तिपुरी नगरी।।४
रिस राग कपट् छल छैन यहाँ। तव धर्म कती छ कती छ ञहाँ।
पशुका पति छन् रखवारि गरी। शिवकी पुरि कान्तिपुरी नगरी।।५

कवि भानुभक्त की उपरोक्त पंक्तियाँ नेपाली साहित्य जगत में ही नहीं अपितु नेपाली संगीत जगत में भी ख्याति अर्जित कर चुकी है। इन पंक्ति में नापाल की राजधानी काठ्माण्डु शहर को स्वर्ग के समान,पशुपति महादेव की नगरी कहकर यहाँ के सौन्दर्य का चित्रण, बड़े मनयोग से किया गया है। राष्ट्रीय गौरव की महिमा का हृदय से निस्वार्थ चित्रण इन पंक्तियों में किया गया है। उक्त जीवनी में जीवनीकीर ने भानुभक्त के व्यक्तिगत जीवन के यथार्थ घटनाओं का उल्लेख भी किया है। जिसमें उनके जमीन के मामले अदालत कोट-कचरी आदि का उल्लेख किया गया है। उक्त जीवनी से प्रमाणित होता है कि कवि भानु भक्त आचार्य स्वस्तिश्रीमद्राजकुमार कुमारात्मज श्री३ कम्यान्डर-इन-चीफ् जनरल कृष्णबहादुर जङ्ग राणा के यहाँ चाकरी करते थे। विक्रमीय सम्वत् १९०७ वैशाख मास में मदेश (तराई) की नोकरी पाकर चले गये और सम्वत् १९०९ में कुछ समस्या के चलते उनकी नौकरी चली गयी और उन्हें कुछ महीने जेल की हवा खानी पड़ी थी। लगभग ५ महिने जेल में उनको रहना पड़ा उस बखत जेल की जो परिस्थिति विकट थी। सभ्य समाज में जेल की कल्पना तक नहीं की जाती। एक पेशेवर नौकरीदार को जेल होना वह भी पाँच-पाँच महिने तक किसी से वार्तालाप न होना इस विकट परिस्थिति का सामना भानुभक्त को करना पड़ा था। वैसे महान पुरुषों के जीवन के दर्शन का अध्ययन करने पर हमें उनके संघर्ष भरी दास्तं मिल ही जाते हैं। नियति के पुतले होने का कारण हमें ऐसी विपरित परिस्थिति से मानव का संबन्ध बराबर बना रहता है। भगवान श्रीराम को चौदह साल का वनवास,महादेव को हलाहल धारण आदि ईश्वर तक को नियति नहीं छोड़ती हम क्या चिज हैं। जब भानुभक्त आचार्य जेल में थे तो उन्होंने जो झेला एक श्लोक में श्री ३ कम्यान्डर इन्चीफ जनरल कृष्णबहादुर को भेजा था-

रोज् रोज् दर्शन पाउँछू चरणको ताप् छैन मन्मा कछू। रात् भर्नाच् पनि हेर्छु खर्च नगरी ठूला चयन्मा मछू।
लाङ्खुटयाहरु उपिञा उडुस् इ संगि छन् इनकै लहर्मा बसी।लाङ्खुट्याहरु गाउँछन् इ उपिञा नाच्छन महेर्छु बसी।।[7]

इतने पर भी उनका कोई प्रत्युत्तर नहीं आया और वहीं जेल में रहते ४ माह में अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड का भाषा श्लोक तयार किया। इसी साल उनके पुत्र रमानाथ का उपनयन संस्कार था तो उन्होंने एक अर्जी लिखकर कम्यान्डर इनचीफ को भेजा वह भी श्लोकबद्ध ही था....

जागिछैँन धनी म छैन घरको केवल् कुदालो खनी। खान्थ्यां दुक्ख गरेर चाकरि गर्यां मान् पाउंला की भनी।
एक् मन् चित्त लगाइ चाकरि गर्याँ खूसी भयाछन् हरी। मान्माथी पनि भुक्तमान् थपिदिया कैल्ह्यै न खोस्न्या गरी।।१
चालिस् वर्ष भञा म पुत्र पनि एक् मात्रै छ आठ् वर्षको। आयो काल् व्रतबन्धको नजिकमा बेला त हो हर्षको।।
क्यारु आज पर्यां म ता विपतमा एक्लो ञहाँ छू फगत। कुन् पाठ्ले व्रतबन्ध पार्गरु मफेमार्न्छु अंध्यरो जगत्।।२
गायत्री दिनु बाबुको छ अधिकार्भिक्षा दिनु माइको। बालख्मा पनि वेद् पढ़ी कन सुसार्गर्नू गुरु गाइको।
यस्तो मुख्य बखत् छ यो अरु छ कुन् काम् पारलाई दिन्या। धैरै बिन्ति कती गरुँ चरणमा एकै कुराले छिन्या।।३
ख्वामित आज हजुर्हरु पृथिविमा मालिक् छंदामा पनी। ब्राह्मण्को व्रतबन्ध अड्कन तयारदेख्यां र मालिक् भनी।
जाहीरात गर्यां प्रभू हजुरमा जो मर्जि होला भनी। कंढैसित् भनि मर्जि हुंछ त भन्या क्यारु सहन्छन्छू पनी।।४[8]

भानुभक्त ने सारे पत्रचार प्राय छंदबद्ध श्लोकों में की है। यह कवि प्रतिभा के निरन्तर अभ्यास का परिणाम भी कहा जा सकता है। इस अर्जी पत्र में अन्य श्लोक भी होने की बत कुछ विद्वान कहते हैं इस पत्र को पाने के बाद सरकार ने उनकी सुनली और उन्हें रिहा कर दिया और फाल्गुन माह संवत् १९०९ विक्रम में उन्होंने अपने पुत्र का उपनयन संस्कार धुमधाम से करवाया। फिर १९१० में वे नेपाल आये और बाँकी भाषा रामायण के युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड का निर्वाद समापन किया। इतना ही नहीं उन्होंने लगातार भक्तमाला तथा प्रश्नोत्तरा जैसी रचनाएँ भी लिखी। भक्तमाला में संसार महाजाल में फँसे पुरुषों की चित्तविकार को दर्शाया गया है। यह भानुभक्त में भरे भक्ति रस का अद्भूत नमुना भी है। उक्त कृति उनकी मौलिक मानी जाती है। प्रश्नोत्तरा संस्कृत से अनुदित ग्रन्थ हैं भानुभक्त आचार्य ने अपनी कविप्रतिभा और कवि कौशलता का परिचय भी इस ग्रन्थ में दिया है।

विक्रम सम्वत् १९१९ में कवि नेपाल से अपने घर जाते समय मार्ग में उनका मित्र तारापति उपाध्याय से उनकी मुलाकात होती है और तारापति उन्हों एक बार अपने घर जाने का आग्रह करने लगे तो कवि मना नहीं कर सके।रात में शास और बहु के बीच नोकझोक हुआ और बात लड़ाइ तक पहुँची रातभर जागा रहकर उन्होंने बधूशिक्षा नामक ग्रन्थ की रचना की। दूसरे दिन भोजनादि के पश्चात् जब भानुभक्त ने यह रात की लिखी रचना तारापति के हाथ में दिया। फिर तारापति को भी जाते जाते तीन श्लोकों में सुझावस्वरुप उपदेश भी दिया जो इस प्रकार के थेः-

एक् थोक् भन्छु न मान्नु दुक्ख मनमा हे मित्र तारापति।
तिम्रा ई जति छन् जहानहरु ता लड्न्या रह्या छन् अती
सुन्यां दन्त बझान आज घरको कर्कर्गर्याको उसै।
भर्गात् जाग्रनझैँ भयो मकन ता लागेन आंखा कसै।।१
धन् इज्जत र कमाइ देख्छु बढिया छैनन् कुनै चीज् कमी।
बूहारी यदि कर्कशा हुन गया क्या घर्गरौला तिमी।
साह्रै झोक उठयो मलाइ र बधूशिक्षा बनाञा पनि।
यस्ले पत्नि बुहारी छोरिहरुको तालिम् गरौला भनी।।२
हुन त म अतिथी हूँ यस् बिन् क्या छ खांचो।

तर पनि त म भन्छु मित्र ह्वौ जानि सांचो।
घर चतुरइँ गर्छन् बुद्धिमान्ले अगाड़ी।
बखत चुकि दिंदामा हुन्छ काहां पछाड़ी।।३[9]

जीवनीकार लिखते हैं कवि भानुभक्त की ऐसी परोपकारी कविता का वर्णन कहाँ तक करुँ। कवि भानुभक्त २५ साल बाद अपने घर को रवाना हुए उनका शरीर जवाब दे रहा था। उन्हें जोर का बुखार था उनको लगा कि अब मेरे इस भौतिक जीनव का अन्त निकट है अतः उस समय वे रामगीती का अनुवाद कर रहे थे, किन्तु रुग्णता के कारण वे इस कार्य को नहीं कर सके उन्होंने अपने पुत्र रमानाथ को लिखने के लिए कहा और उन्होंने जीवन के अन्तिम मरणासन्न अवस्था में भी रमानाथ को मार्गनिर्देश कर इस कृति को पूर्ण किया। रमानाथ ने भानुभक्त के आखिरी जीवन का अनुभव, रसास्वादन किया और रामगीता नेपाली साहित्य जगत को समर्पित किया। पिताजी के मुख से लिकले हरेक वाणी को उन्होंने शब्दबद्ध किया अतः उक्त कृति अमर है यद्यपि भानुभक्त उक्त कृतिका मार्गनिर्देश करते हुए कालकवलित हुए। पर उनकी यह कृति आज भी नेपाली जगत को अमर बनाती रही है।

जीनवीकार जब भानुभक्त के विषय में अनुसन्धान करने निकले तो भानुभक्त के परम मित्र श्रीयुत सुब्बा धर्म्मदत्त ज्योतिषी के सम्पर्क में आये। उन्होंने कवि के काव्य लेखन स्वभाव को उन्हें बताया था उन्होंने कहाथा कवि भानुभक्त दिन में ६० श्लोक शार्दूलविक्रीडित थन्द में लिख लेते थे। रामायण युद्धकाण्ड लिखते समय वे १ दिन में ६०लश्लोकों की रचना करते थे। इस प्रसंग में मोतीराम भट्ट ने कविता के लक्षण पर विचार करते हुए इस जीवनी के सन्दर्भ में खूद लिखते हैं-

धन्ले हुँदैन कविता न त हुन्छ मन्ले। ज्ञान्ले हुँदैन कविता न त हुन्छ तन्ले
इन्ले भयाकि कविता कविता समान्हो।आफै भयाकि कविता बहुतै असल् हो।।

जीवनीकार ने स्पष्ट लिका है "भक्तिरसमा त अब उप्रान्त पनि भानुभक्तका बराबर कौनै कवि पनि हुन सक्दैनन् भन्ने मेरा मनमा लाग्छ तर पनि ईश्वरको सृष्टि हो; भइगये भने पनि इनीका बराबरै हुनन्; इनीभन्दा बढ़ता पक्का कोई पनि हुने छैनन् भनी ठोकी लेखी दिञे।" [10]

ये वही मोतीराम भट्ट हैं जिन्होंने सर्वप्रथम कवि भानुभक्त आचार्य को आदि कवि की उपाधि से सम्मानित किया था। यद्यपि कुछ विद्वान इस तर्क को नहीं मानते फिर भी सामान्य जनमानस में वे नेपाली साहित्य के आदिकवि के रुप में ही प्रसिद्ध हैं।

निष्कर्षः

नेपाली भक्ति साहित्य में आदिकवि भानुभक्त आचार्य का वही स्थान है जो हिन्दी साहित्य में तुलसीदासूस का, क्योंकि दोनो महान लेखक समाज को राम के राज्य के समान इस धर्ती में रामराज्य स्थापित करने की संकल्पना की है। ऐसे महान विभूतियों के कारण महारा साहित्य समृद्ध होता है। स्वामी विवेकानन्ध, स्वामी दयानन्द सरस्वती, सन्त कबीर, सन्त ज्ञान्दिलदास ऐसे महामानव हैं जिन्होंने हमारे साहित्य को समृद्ध किया है और ऐसी रचनासंसार से परिचय करवाया है जिससे महारे साहित्य को एक नयी उर्जा प्राप्त हुई।

संदर्भ सूची

1. कविभामुभक्तको जीवन चरित्र, मोतीराम भट्ट, साझा प्रकाशन, प्रखम संस्करण, प्रकाशकीय पृष्ठ
2. वही, पृ-२
3. वही, पृ-४
4. वही, पृ-७-८
5. वही, पृ-९
6. वही, पृ-१०
7. वही, पृ-१५
8. वही, पृ-१६-१७
9. वही, पृ-१७-१८
10. वही, पृष्ठ-२४